The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 12 | December 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

पर्यावरण शिक्षा में मीडिया की भूमिका

डॉ0 मनोहर लाल
सहायक आचार्य
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
महात्मा गांधी विद्यापीठ, वाराणसी।

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:
मीडिया, प्रकृति, पर्यावरण, प्रदूषण, शिक्षा, स्वास्थ्य, वैज्ञानिक, शोध, जागरूकता

ABSTRACT

पर्यावरण मानव विकास का प्रमुख आधार है। सभ्यता के प्रारंभिक चरण से ही मानव प्रकृति के सानिध्य में रहकर अपना जीवन व्यतीत किया है। आज भी हमारे जीवन का प्रमुख आधार प्रकृति है। प्रकृति ने हमें रहने के लिए पृथ्वी,खाने के लिए फल ,पीने के लिए पानी और सांस के लिए हवा उपलब्ध कराया है। प्रकृति हमारे जीने का प्रमुख आधार है, जब भी प्राकृतिक अपने आती हैं तो हमारा जीवन खतरे में पड़ जाता है। इसलिए प्रकृति की रक्षा हमारा दायित्व है। प्रकृति की रक्षा हम तभी कर सकते हैं जब हम पर्यावरण के प्रति जागरुक होकर अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें। पर्यावरणीय जागरूकता के लिए पर्यावरण शिक्षा आवश्यक है। पर्यावरण की शिक्षा हम कई माध्यमों से प्राप्त करते हैं, जिसमें आज मीडिया एक प्रमुख माध्यम है। प्रस्तुत शोध पत्र में पर्यावरण शिक्षा में मीडिया की भूमिका का अध्ययन ऐतिहासिक और वर्णनात्मक विधि से द्वितीयक स्रोतों के आधार पर गया है।

प्रस्तावना:

भारतीय सभ्यता और संस्कृति में पर्यावरण विशेष महत्व है। प्राचीन भारत की दिनचर्या प्रकृति पर ही आधारित थी। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में चार आश्रमों का उल्लेख मिलता है।इन चार आश्रमों में से एक 'वानप्रस्थ आश्रम' भी है। भारतीय ज्ञान परम्परा में उपनिषदों का विशेष महत्व है।इन उपनिषदों में एक 'वृहदारण्यक उपनिषद' भी है। प्राचीन भारतीय ऋषि परम्परा में जहां 'गुरु आश्रम' वनों में होता था, वहीं शिक्षा के लिए ज्ञान का केन्द्र 'गुरुकुल' भी वनों में ही होता था। इसका उल्लेख हमें रामायण और महाभारत के साथ ही अन्य प्राचीन भारतीय साहित्य में

मिलता है। जैन एवं बौद्ध साहित्य से पता चलता है कि जैन धर्म एवं जैन मुनियों के शिक्षा एवं विचार का प्रमुख केन्द्र भी वनों में ही था। बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध को ज्ञान भी 'वटवृक्ष' के नीचे प्राप्त हुआ था और उन्होंने अपना प्रथम उपदेश भी सारनाथ में 'वटवृक्ष' के नीचे ही दिया था। भारतीय समाज एवं संस्कृति में पर्यावरण और पर्यावरण शिक्षा का विशेष महत्व है।

पर्यावरण का अर्थ - पर्यावरण के अर्थ में जीवों के जीवन, विकास एवं अस्तित्व को प्रभावित करने वाली सभी बाहरी स्थितियां सम्मिलित है। पर्यावरण के अन्तर्गत सजीव और निर्जीव दोनों शामिल हैं। यदि हम पर्यावरण की शाब्दिक व्याख्या करते हैं तो 'परि' और 'आवरण' शब्दों से मिलकर पर्यावरण बना है। 'परि' का अर्थ होता है चारों ओर एवं 'आवरण' का अर्थ होता है घिरा हुआ।इस प्रकार पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ होता है चारों ओर से घिरा हुआ। इस प्रकार हम अपने चारों तरफ जो कुछ भी देखते हैं वहीं हमारा पर्यावरण है। नदी ,पहाड़, तालाब, मैदान, पेड़-पौधे, जीव-जंतु, हवा, वन मिट्टी आदि सभी हमारे पर्यावरण के महत्वपूर्ण घटक है। जैविक एवं अजैविक पर्यावरण के दो प्रमुख घटक है।जैविक पर्यावरण के अन्तर्गत पशु, पक्षी, जंगल, कीड़े, सरीसृप और सूक्ष्मजीव जैसे शैवाल, कीटाणु, जीवाणु एवं कवक आते हैं। अजैविक पर्यावरण के अन्तर्गत वह सब कुछ सम्मिलित किया जाता है ,जो जीवित नहीं है हवा, बादल, धूल, भूमि, पहाड़, नदियां , तापमान, आर्द्रता, पानी, जल वाष्प, रेत, आदि सभी अजैविक पर्यावरण के अन्तर्गत आते है।

मनुष्य के चारों ओर फैले हुए वातावरण को पर्यावरण की परिधि में माना जाता है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक पर्यावरण में ही रहता है । प्रसिद्ध विद्वान डगलस एवं हालैण्ड का मानना है कि 'पर्यावरण वह शब्द है जो समस्त वाह्य शक्तियों ,प्रभावों और परिस्थितियों का सामूहिक रूप से वर्णन करता है जो जीवधारी के जीवन ,स्वभाव ,व्यवहार एवं अभिवृद्धि , विकास एवं प्रौढ़ता पर प्रभाव डालता है।' पर्यावरण का अर्थ वह परिवेश है, जिसमें हम रहते हैं। यह भौतिक, रासायनिक और जैविक तत्वों से मिलकर बना है।

पर्यावरण की परिभाषा - पर्यावरण की कई परिभाषा विद्वानों एवं संस्थाओं द्वारा दी गई है। पर्यावरण की कुछ प्रमुख परिभाषाएं इस प्रकार है-

सी.सी. पार्क के अनुसार- मनुष्य एक विशेष समय पर जिस सम्पूर्ण परिस्थितियों से धिरा हुआ है उसे पर्यावरण या वातावरण कहा जाता हैं।

हर्सकोविट्ज के अनुसार - जो तथ्य मानव के जीवन और विकास को प्रभावित करते है, उस सम्पूर्ण तथ्यों का योग पर्यावरण कहलाता है। भले ही वे तथ्य सजीव हो या निर्जीव।

विश्व शब्दकोश के अनुसार- पर्यावरण उन सभी दशाओं, प्रणालियों तथा प्रभावों का योग है, जो जीवों एवं उनकी प्रजातियों के विकास जीवन एवं मृत्यु को प्रभावित करता हैं।

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 के अनुसार- पर्यावरण किसी जीव के चारों तरफ घिरे भौतिक एवं जैविक दशाएं और उनके साथ अंत:क्रिया को सम्मिलित करता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि इस पृथ्वी पर पाए जाने वाले भूमि,जल, वायु, पेड़-पौधे, एवं जीव-जन्तुओं का समूह, जो हमारे चारों तरफ़ है,सामूहिक रूप में पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण के प्रमुख अंग स्थल मण्डल, जीव मण्डल और वायु मण्डल है और पर्यावरण को बाह्य रूप से तीन भागों भौतिक पर्यावरण , जैविक पर्यावरण और मनोसामाजिक पर्यावरण में विभक्त किया गया है।

पर्यावरण शिक्षा- भारतीय शिक्षा व्यवस्था में पर्यावरण शिक्षा का महत्व वैदिक काल से ही देखने को मिलता है। वैश्विक पर्यावरण की समस्या को देखते हुए वर्तमान परिवेश में भी पर्यावरण की शिक्षा आवश्यकता विद्वानों द्वारा महसूस की गई। यूनेस्को की कार्य समिति 1970 के अनुसार 'पर्यावरण शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत मनुष्य तथा उसके पर्यावरण (सांस्कृतिक तथा भौतिक-जैविक) पारस्परिक सम्बन्ध तथा निर्भरता को समझने का प्रयास किया जाता है और उसको स्पष्ट करने हेतु कौशल, अभिवृत्ति मूल्यों का विकास करते हैं। यह निर्णय लिया जाता है कि क्या किया जाए ? जिससे वातावरण की समस्याओं का समाधान किया जा सके और पर्यावरण में गुणवत्ता लाई जा सके।' आगे चलकर यूनेस्को के सेमिनार ,1976 में यह विचार प्रस्तुत किया गया कि 'पर्यावरण शिक्षा एक ढंग है जिससे पर्यावरण संरक्षण के लक्ष को प्राप्त किए जाएं। विज्ञान तथा अध्ययन क्षेत्र की पृथक शाखा नहीं है अपितु जीवन पर्यंत चलने वाली शिक्षा की एकीकृत प्रक्रिया है।' यूनेस्को के अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन,1977 में 'पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य को प्रतिपादित किया गया जिसमें सभी स्तरों तथा औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा के उद्देश्यों का विशिष्टीकरण भी किया गया।' आज लगभग सभी सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा पर्यावरण की शिक्षा दी जा रही है।

ए.बी.सक्सेना के अनुसार- 'पर्यावरण शिक्षा वह प्रक्रिया है जो पर्यावरण के बार में हमें संचेतना, ज्ञान और समझ देती है । इसके बारे में अनुकूल दृष्टिकोण का विकास करती है और इसके संरक्षण तथा सुधार की दिशा में हमे प्रतिबद्ध करती हैं।' प्रसिद्ध शिक्षाविद टॉमसन का कहना है कि 'पर्यावरण ही शिक्षक है, शिक्षा का काम छात्र को उसके अनुकूल बनाना हैं।'

कोठारी शिक्षा आयोग-1966 तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 में 'पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्यों के लिए संस्तुति की थी कि छात्रों को भौतिक तथा जैविक पर्यावरण के सम्बन्ध में जानकारी दी जानी चाहिए तथा विद्यालय के

अध्ययन विषयों के साथ पर्यावरण शिक्षा को सम्मिलित किया जाना चाहिए।' राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 में भी पर्यावरण जागरूकता एवं पर्यावरण शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है।

पर्यावरण शिक्षा की विधि- पर्यावरण शिक्षा के लिए सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक दोनों विधि का प्रयोग किया जाता है। पर्यावरण शिक्षा के लिए प्रमुख विधियों में लेखन,व्याख्यान, वाद-विवाद, नाटक ,संगोष्ठी, कार्यशाला, प्रशिक्षण कार्यक्रम, शैक्षणिक प्रदर्शन, शैक्षणिक पर्यटन, शैक्षणिक प्रतियोगिता, दूरस्थ शिक्षा एवं संचार माध्यमों का प्रयोग किया जाता है।

प्रकृति एवं पुरुष का अन्त:सम्बन्ध भारतीय समाज में सभ्यता के प्रारंभिक चरण से ही देखते को मिलता है। लेकिन विश्व में औद्योगिक क्रान्ति के बाद भारत में भी तीव्र गति से औद्योगिक विकास हुआ। औद्योगिक विकास के कारण भारतीय समाज में पर्यावरणीय जागरूकता में कमी देखने को मिलने लगीं और हमारा पर्यावरण भी प्रदूषित होने लगा। पर्यावरण प्रदूषण का प्रभाव बहुत तेजी के साथ हमारे स्वास्थ्य पर पड़ने लगा और भारतीय जन जीवन प्रभावित होने लगा। तब भारत का बौद्धिक वर्ग समाज में पर्यावरणीय जागरूकता की कमी महसूस करने लगा और पर्यावरण सम्बंधित जागरूकता के लिए चिन्तित हुआ। पर्यावरणीय जागरूकता के लिए विद्यालयों, महाविद्यालयों सहित विश्वविद्यालय में पर्यावरण शिक्षा का प्रावधान किया गया। लेकिन पर्यावरणीय जन जागरुकता अभियान में शैक्षणिक संस्थाएं पूरी तरह सफल नहीं हुई। इसलिए पर्यावरण शिक्षा को जनव्यापी बनाने के लिए पर्यावरण विशेषज्ञों द्वारा मीडिया का सहारा लिया गया। पर्यावरण शिक्षा में मीडिया का सकारात्मक प्रभाव समाज में पर्यावरण विशेषज्ञों को देखने को मिला।

मीडिया का अर्थ एवं प्रकार- अभिव्यक्ति के परम्परागत एवं आधुनिक माध्यमों को संयुक्त रूप में मीडिया कहा जाता है। समाचार-पत्र, पत्रिका, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, कम्प्यूटर आदि को मीडिया के अन्तर्गत आते है। मीडिया चार प्रकार की होती है।जो इस प्रकार है -ट्रेडीशनल मीडिया, प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और न्यू मीडिया।

1- ट्रेडिशनल मीडिया- ट्रेडिशनल मीडिया में लोक कलाएं, लोक कथाएं और लोक परम्पराएं शामिल हैं।

2- प्रिंट मीडिया- प्रिंट मीडिया में समाचार पत्र और पत्रिकाएं शामिल हैं।

3- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में सिनेमा, टेलीविजन और रेडियो शामिल हैं।

4- न्यू मीडिया- न्यू मीडिया में फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम आदि शामिल हैं ।

मीडिया का कार्य- मीडिया का प्रमुख कार्य सामाजिक ,आर्थिक, सांस्कृतिक,धार्मिक ,राजनीतिक, शैक्षणिक एवं पर्यावरणीय सूचनाओं का प्रसार-प्रचार करना है। देश काल परिस्थिति के अनुसार मीडिया का कार्य समाजीकरण, विभिन्न समूहों को जोड़ना, जन निगरानी सहित सामाजिक मुद्दों पर जन जागरुकता फैलाना भी है।

मीडिया का उद्देश्य- मीडिया के सकारात्मक प्रभाव को देखते हुए संचार वैज्ञानिकों ने सूचना, शिक्षा और मनोरंजन मीडिया के तीन प्रमुख उद्देश्य बताएं है। किसी भी विकासशील देश में सूचना, शिक्षा और मनोरंजन तीनों का विशेष महत्व है। इसलिए विकासशील देशों में मीडिया द्वारा कार्यक्रमों का निर्माण राष्ट्रीय विकास को ध्यान में रखकर कर किया जाता है। मीडिया द्वारा विकासपरक कार्यक्रमों के निर्माण किया जाता है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से जनता को सूचना और शिक्षा प्रदान करने के साथ ही जनता का मनोरंजन भी किया जाता है।

पर्यावरण शिक्षा में मीडिया की भूमिका

आज मीडिया का प्रयोग सभी लोग कर रहे हैं। समकालीन समाज में मीडिया मनोरंजन का ही नहीं बल्कि शिक्षा का भी प्रमुख माध्यम है। इसलिए समय-समय पर मीडिया द्वारा पर्यावरणीय सूचनाओं को भी प्रकाशित एवं प्रसारित किया जाता है। पर्यावरण संरक्षण के लिए वैज्ञानिकों निरंतर शोध किया जा रहा है। शोध अध्ययन में पाया जा रहा है कि पर्यावरण ही पृथ्वी पर मानव जीवन के अस्तित्व का आधार है । पर्यावरण के अभाव में पृथ्वी पर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। हमें स्वस्थ जीवन व्यतीत करने के लिए शुद्ध हवा,स्वच्छ पानी एवं उपजाऊ भूमि की आवश्यकता होती है। यह सभी हमारी मूलभूत आवश्यकताएं हैं और पर्यावरण का अभिन्न एवं अनिवार्य तत्व हैं। मीडिया द्वारा जल, जमीन और जंगल पर आधारित शैक्षणिक कार्यक्रमों प्रकाशन एवं प्रसारण प्रतिदिन किया जाता है।

समाचार-पत्र और पत्रिकाओं में पर्यावरण शिक्षा के लिए विद्वानों द्वारा निरन्तर लेखन कार्य किया जा रहा है। समाचार पत्रों में पर्यावरण पर आधारित समाचार , सम्पादकीय, लेख,फीचर, कहानी,नाटक, यात्रा वृतांत आदि का प्रकाशन नियमित किया जा रहा है। इसके साथ ही समाचार-पत्रों में पर्यावरण पर केंद्रित परिशिष्ट एवं पत्रिकाओं के विशेषांक भी प्रकाशित किया जा रहा हैं।

रेडियो जनसंचार सशक्त माध्यम है। पर्यावरण के महत्व को ध्यान में रखकर शैक्षणिक कार्यक्रमों का प्रसारण रेडियो द्वारा किया जा रहा है। रेडियो पर पर्यावरण शिक्षा से सम्बंधित समाचार, डाक्यूमेंट्री, परिचर्चा, साक्षात्कार, नाटक, प्रहसन आदि का प्रसारण नियमित किया जाता है।

टेलीविजन जन सम्प्रेषण का प्रभावी माध्यम है। टेलीविजन पर भी पर्यावरण से सम्बंधित समाचार, परिचर्चा, साक्षात्कार, धारावाहिक, डाक्यूमेंट्री, टेलीफिल्म आदि प्रमुख कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है। इन सभी कार्यक्रमों का उद्देश्य पर्यावरणीय जागरूकता एवं शिक्षा होता है।

न्यू मीडिया के रूप में फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, यूट्यूब जैसे कई आनलाइन प्लेटफार्म है। जहां पर्यावरण शिक्षा से सम्बंधित पोस्ट, पोस्टर, लेख, विडियो एवं रील्स पढ़ें और देखें जा सकते हैं। ब्लॉग लेखन भी महत्वपूर्ण विधा है। पर्यावरण पर केंद्रित लेखन कार्य कई ब्लॉग लेखक कर रहे है, जिसका पर्यावरण शिक्षा में विशेष महत्व है।

निष्कर्ष - मीडिया सूचना एवं विचार सम्प्रेषण का प्रभावी माध्यम है। इसलिए पर्यावरण शिक्षा में जनसंचार के विविध माध्यमों का प्रयोग देश-काल और परिस्थिति के अनुसार करना चाहिए। प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, न्यू मीडिया और परम्परागत मीडिया का प्रमुख उद्देश्य सूचना, शिक्षा और मनोरंजन तीनों है। लेकिन सबका प्रभाव अलग-अलग है। इसलिए पर्यावरण शिक्षा में मीडिया का प्रयोग लक्षित पाठक, श्रोता और दर्शक को ध्यान में रखकर करना चाहिए।

अत: उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि पर्यावरण शिक्षा में मीडिया की भूमिका सकारात्मक होती है।पर्यावरण शिक्षा का मानव जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। अनुकूलन वातावरण से ही मानव विकास की दिशा तय होती है। पर्यावरण शिक्षा का मानव की भावनाओं एवं कल्पनाओं पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। अनुकूल पर्यावरण शिक्षा से ही मानव का उचित विकास सम्भव है। मानव के निरन्तर विकास के लिए मीडिया को पर्यावरणीय शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। पर्यावरणीय परिस्थितियों को ध्यान में रखकर आज मीडिया द्वारा कार्यक्रमों का निर्माण किया जा रहा है। इसलिए पर्यावरण शिक्षा में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका देखने को मिला रही है।

सन्दर्भ सूची -

1. पाण्डेय, के.पी., भारद्वाज, अमिता एवं पाण्डेय, आशा)2007):पर्यावरण शिक्षा एवं भारतीय सन्दर्भ, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. समैया,अनूपी)2018-19): पर्यावरण शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
3. शर्मा,आर).ए.2014): पर्यावरण शिक्षा,आरलाल बुक डिपो.,मेरठ।
4. गलीसन, बीएवं लोअ ., एन).1999):वैश्विक नैतिकता और पर्यावरण, रोटलेज ,लंदन।

5. सिंह, जे.एस., सिंह, एसएवं गुप्ता .पी., एस).आर .2014):पारिस्थितिकी, पर्यावरण विज्ञान और संरक्षण, एस . चंद पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
6. भारतीय,जमना लाल)2004): शैक्षिक पत्रकारिता, राजस्थान प्रकाशन, जयपुर।
7. सिंह, रामपाल एवं उपाध्याय, राधा बल्लभ)2007): शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
8. राजगढ़िया, विष्णु)2011): जनसंचारसिद्धांत एवं अनुप्रयोग :, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
9. सिंह, श्रीकांत)2020): सम्प्रेषणप्रतिरूप एवं सिद्धांत :,कोशल पब्लिकेशन, अयोध्या।
10. तिवारी, अर्जुन)2005): सम्पूर्ण पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
11. सिंह,ओम प्रकाश)2012): संचार के मूल सिद्धांत, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली।
12. दीक्षित, सूर्य काश)2004):जन पत्रकारिता, जनसंचार और जन सम्पर्क, संजय प्रकाशन,नई दिल्ली।
13. शर्मा, राकेश कुमार)2012):पर्यावरण प्रशासन एवं मानव पारिस्थितिकी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।